ओ३म्

महर्षि दयानंद सरस्वती और उनके क्रान्तिकारी शिष्य



ओ३म्

विद्यार्थियों के आठ गुण



पुरुषार्थ (मेहनत)



बुद्धिवर्धक पदार्थों का सेवन करना



बुद्धिमत्ता (विवेक)



लोभ, लालच न करना



सुखी, सफल विद्यार्थी



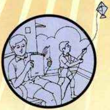
स्थिरता-दृढता



घमंड न करना,
सरल रहना



प्रगतिशील रहना



समय बर्बाद न करना

निरंतर सफलता और उन्नति को प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को ये अनमोल गुण ग्रहण करने चाहिए।

महर्षि दयानन्द जी के विषय में विभिन्न महापुरुषों के विचार

1. महर्षि दयानन्द स्वराज्य के सर्वप्रथम सन्देशवाहक तथा मानवता के उपासक थे। - लोकमान्य तिलक

2. मैंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा और उससे मेरे जीवन का लक्ष्य बदल गया। आर्य समाज के सिद्धांत सार्वभौमिक हैं। उन्हें हराने की किसी में शक्ति नहीं है। - हुतात्मा रामप्रसाद बिस्मिल

3. स्वामी दयानन्द के विषय में मेरा मन्तव्य यह है कि वह हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों, सुधारकों और श्रेष्ठ पुरुषों में अग्रणी थे। उनका ब्रह्मचर्य, समाज सुधार, स्वातन्त्र्य स्वराज्य,सर्वप्रतिप्रेम, कार्यकुशलता आदि गुण लोगों को मुग्ध करते थे। -महात्मा गांधी

4. स्वामी दयानन्द के जीवन में सत्य की खोज दिखाई देती है इसलिए वे केवल आर्य समाजियों के लिये नहीं अपितु समग्र संसार के लिए पूजनीय हैं। - कस्तूरबा गांधी

5. महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषों में से थे जिन्होंने आधुनिक भारत का विकास किया जो उसके आचार सम्बंधी पुनरूत्थान तथा धार्मिक पुनरूत्थान के उत्तरदाता हैं। हिन्दू समाज का उद्धार करने में आर्य समाज का बहुत बड़ा हाथ है। संगठन कार्य दृढ़ता, उत्साह और समन्वयपालकता की दृष्टि से आर्य समाज की समता कोई और समाज नहीं कर सकता। - नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

6. स्वामी दयानन्द संस्कृत के बड़े विद्वान् और वेदों के बहुत बड़े समर्थक थे। उत्तम विद्वान् के अतिरिक्त साधु स्वभाव के व्यक्ति थे। उनके अनुयायी उनको देवता मानते थे और बेशक वे इसी लायक थे। हमसे स्वामी दयानन्द की बहुत मुलाकात थी। हमेशा इनका निहायत आदर करते थे। वह ऐसे व्यक्ति थे जिनकी उपमा इस वक्त हिन्दुस्तान में नहीं है।
- महर्षि के समकालीन-सर सैयद अहमद खाँ, (अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के संस्थापक)

7. मैंने स्वराज्य शब्द सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों से सीखा। - दादाभाई नौरोजी

8. स्वामी दयानन्द स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा और हिन्दू जाति के रक्षक थे। - महान क्रान्तिकारी वीर सावरकर

9. स्वामी दयानन्द जी का सबसे बडा योगदान यह था कि उन्होंने देश को किंकर्त्तव्यविमूढ़ता के गहरे गड्ढे में गिरने से बचाया। उन्होंने भारत की स्वाधीनता की वास्तविक नींव डाली। - लौहपुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल

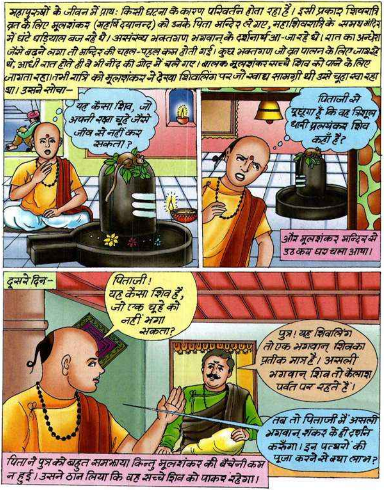
10. महर्षि दयानन्द ने राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक उद्धार का बीड़ा उठाया। स्वामी जी ने जो स्वराज्य का पहला सन्देश हमें दिया उसकी रक्षा हमें करनी है। उनके उपदेश सूर्य के समान प्रभावशाली हैं। - सर्वपल्ली डॉ० राधाकृष्णन

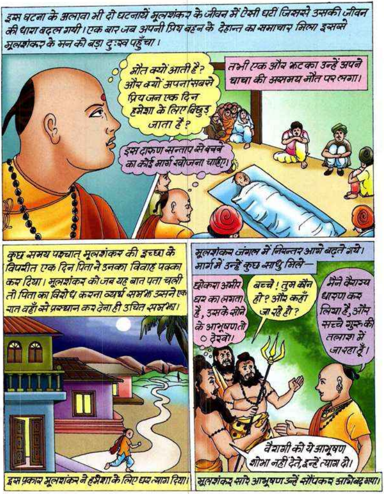
11. गांधी राष्ट्रपिता हैं तो दयानन्द राष्ट्रपितामह हैं। - प्रथम लोकसभा अध्यक्ष, डॉ०श्री अनन्तशयनम् आयंगर

12. मेरा सादर प्रणाम हो उस महान् गुरू दयानन्द को जिन्होंने भारत वर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व के अज्ञान से मुक्तकर सत्य और पवित्रता की जागृति में ला खड़ा किया, उसे मेरा बारम्बार प्रणाम। - रविन्द्र नाथ टैगोर

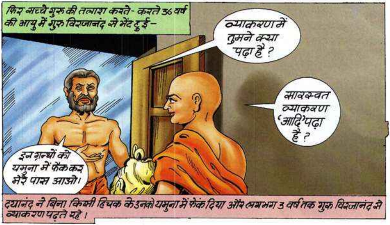

लेखक व चित्रांकन
भारत मकवाना
महर्षि दयानन्द सरस्वती
और उनके क्रान्तिकारी शिष्य
ओ३म्
हमारा देश परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। भारत के भाग्याकाश पर अविद्या और अंधकार की घटायें छाई हुई थीं। देश के अन्दर धर्म के पुजारियों ने धर्म के रूप को विकृत कर दिया था। छूआ-छूत, अशिक्षा और गरीबी का बोलबाला था। दूसरी ओर अंग्रेज हमारी प्राचीन भारतीय सभ्यता को पूरी तरह समाप्त करने के लिए तैयार थे।
ऐसे में देश को जरूरत थी एक पथप्रदर्शक की, जिसमें हमारे प्राचीन ऋषियों, महापुरुषों जैसे समस्त गुण हों। जिसमें हनुमान् और भीष्म पितामह जैसे ब्रह्मचारी हों।
महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे ही शुभ गुणों से सुभूषित महामानव थे। उनका जन्म सम्वत्-1818 में फागुन वदी दशमी तिथि को, तदनुसार -12 फरवरी सन् 1825 को गुजरात के मौरवी प्रान्त के गॉव टंकारा में श्री कर्षन जी तिवारी 'औदीच्य ब्राह्मण' के घर हुआ था। उनका बचपन का नाम मूलशंकर था।

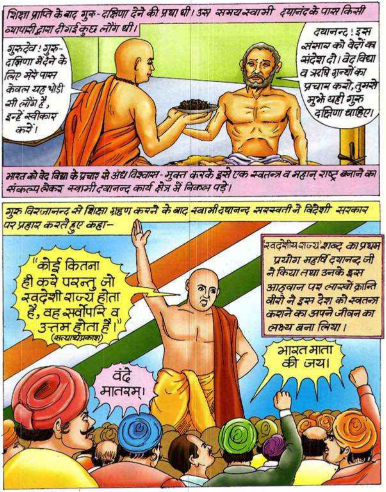

बालक मूलशंकर कुछ बड़ा हुआ तो पिता ने उसकी घर पर ही शिक्षा देने की व्यवस्था कर दी। तीन वर्ष की आयु में ही इस मेधावी बालक ने गायत्री मंत्र को कंठस्थ कर लिया था। मूलशंकर की स्मृति विलक्षण थी...वह एक बार जिस पाठ को याद कर लेता फिर कभी नहीं भूलता था।
मूलशंकर! मैंने तुम्हें जो पाठ याद कराया था वह याद है न?
जी, गुरुजी! अभी सुनाऊँ?

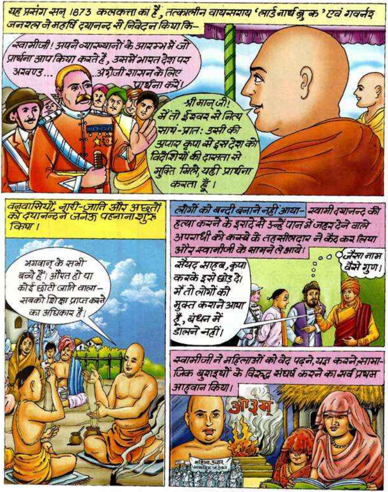

महापुरुषों के जीवन में प्राय: किसी घटना के कारण परिवर्तन होता रहा हैं। इसी प्रकार शिवरात्रि व्रत के लिए मूलशंकर (महर्षि दयानन्द) को उनके पिता मन्दिर ले गए, महाशिवरात्रि के समय मंदिर में घंटे घड़ियाल बज रहे थे। असंख्य भक्तगण भगवान् के दर्शनार्थ आ-जा रहे थे। रात का अन्धेरा जैसे बढ़ने लगा तो मन्दिर की चहल-पहल कम होती गई। कुछ भक्तगण जो व्रत पालन के लिए जाग रहे थे, आधी रात होते ही वे भी नींद की गोद में चले गए। बालक मूलशंकर सच्चे शिव को पाने के लिए जागता रहा। तभी रात्रि को मूलशंकर ने देखा शिवलिंग पर जो खाद्य सामग्री थी उसे चूहा खा रहा था। उसने सोचा–
यह कैसा शिव, जो अपनी रक्षा चूहे जैसे जीव से नहीं कर सकता?
पिताजी से पूछूंगा हूं कि वह त्रिशूल धारी प्रलयंकर शिव कहाँ हैं?
और मूलशंकर मन्दिर से उठकर घर चला आया।
दूसरे दिन–
पिताजी! यह कैसा शिव हैं, जो एक चूहे को नहीं भगा सकता?
पुत्र! यह शिवलिंग तो एक भगवान् शिवका प्रतीक मात्र है। असली भगवान् शिव तो कैलाश पर्वत पर रहते हैं।
तब तो पिताजी मैं असली भगवान् शंकर के ही दर्शन करूँगा। इन पत्थरों की पूजा करने से क्या लाभ?
पिता ने पुत्र को बहुत समझाया किन्तु मूलशंकर की बैचेनी कम न हुई। उसने ठान लिया कि वह सच्चे शिव को पाकर रहेगा।

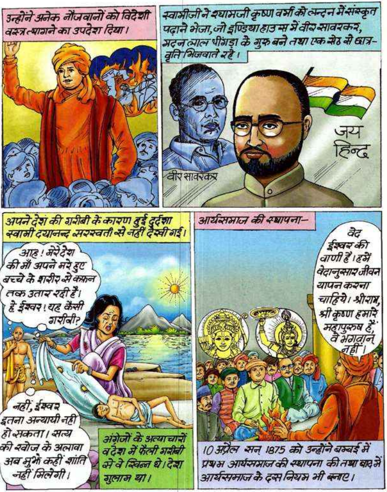

इस घटना के अलावा भी दो घटनायें मूलशंकर के जीवन में ऐसी घटीं जिससे उसकी जीवन की धारा बदल गयी। एक बार जब अपनी प्रिय बहन के देहान्त का समाचार मिला इससे मूलशंकर के मन को बड़ा दुःख पहुँचा।
मौत क्यों आती है? और क्यों अपना सबसे प्रिय जन एक दिन हमेशा के लिए बिछुड़ जाता है?
तभी एक और झटका उन्हें अपने चाचा की असमय मौत पर लगा।
इस दारुण सन्ताप से बचने का कोई मार्ग खोजना चाहिए।
कुछ समय पश्चात् मूलशंकर की इच्छा के विपरीत एक दिन पिता ने उनका विवाह पक्का कर दिया। मूलशंकर को जब यह बात पता चली तो पिता का विरोध करना व्यर्थ समझा उसने एक रात वहाँ से प्रस्थान कर देना ही उचित समझा।
इस प्रकार मूलशंकर ने हमेशा के लिए घर त्याग दिया।
मूलशंकर जंगल में निरन्तर आगे बढ़ते गये। मार्ग में उन्हें कुछ साधु मिले—
छोकरा अमीर घर का लगता है, उसके सोने के आभूषण तो देखो।
बच्चे! तुम कौन हो? और कहाँ जा रहे हो?
मैंने वैराग्य धारण कर लिया है, और सच्चे गुरु की तलाश में जा रहा हूँ।
वैरागी को ये आभूषण शोभा नहीं देते, इन्हें त्याग दो।
मूलशंकर सारे आभूषण उन्हें सौंपकर आगे बढ़ गया।

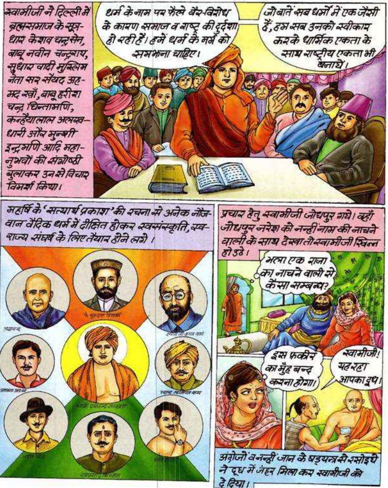

स्वामी 'पूर्णानंद सरस्वती' से दीक्षा लेकर 'मूलशंकर' 'स्वामी दयानन्द सरस्वती' कहलाये...
सच्चे गुरु की खोज में एक दिन 'मूलशंकर' से 'स्वामी दयानंद सरस्वती' बनकर वे ओखीमठ पहुँचे, उनका तेजस्वी मुख देखकर मठाधीश बड़े प्रभावित हुए।
दयानंद ! इस मठ में रह जाओ मैं तुम्हें पट्ट शिष्य बनालूँगा। मेरे बाद मठ के स्वामी तुम ही बनोगे।
महन्तजी ! मेरे परिवार में धन की कोई कमी नहीं है। मैं तो केवल सत्य की खोज में घर से निकला हूँ।

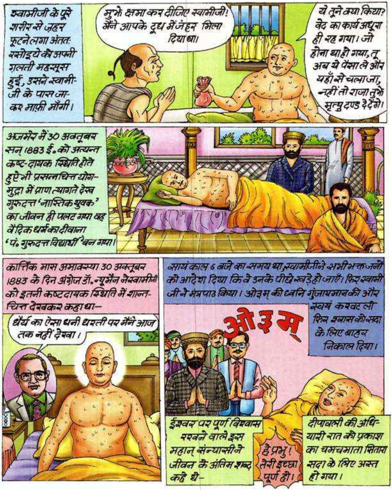

फिर सच्चे गुरु की तलाश करते- करते 36 वर्ष की आयु में गुरु विरजानंद से भेंट हुई-
व्याकरण में तुमने क्या पढ़ा है ?
सारस्वत व्याकरण 'आदि' पढ़ा है ?
इन ग्रन्थों को यमुना में फैंककर मेरे पास आओ।
दयानंद ने बिना किसी हिचक के उनको यमुना में फेंक दिया और लगभग 3 वर्ष तक गुरु विरजानंद से व्याकरण पढ़ते रहे।

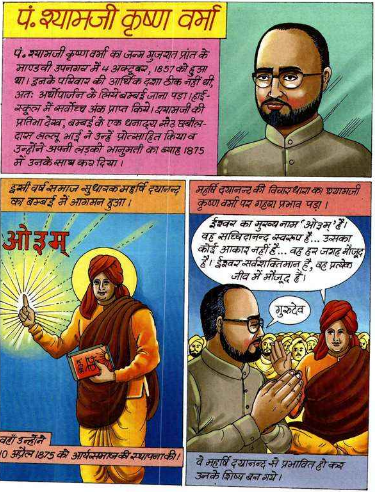

शिक्षा प्राप्ति के बाद गुरु-दक्षिणा देने की प्रथा थी। उस समय स्वामी दयानंद के पास किसी व्यापारी द्वारा दी गई कुछ लौंग थी।
गुरुदेव ! गुरु-दक्षिणा में देने के लिए मेरे पास केवल यह थोड़ी सी लौंग हैं, इन्हें स्वीकार करें।
दयानन्द ! इस संसार को वेदों का संदेश दो। वेद विद्या व ऋषि ग्रन्थों का प्रचार करो, तुमसे मुझे यही गुरु दक्षिणा चाहिए।
भारत को वेद विद्या के प्रचार से अंध विश्वास-मुक्त करके इसे एक स्वतन्त्र व महान् राष्ट्र बनाने का संकल्प लेकर स्वामी दयानन्द कार्य क्षेत्र में निकल पड़े।
गुरु विरजानन्द से शिक्षा ग्रहण करने के बाद स्वामी दयानन्द सरस्वती ने विदेशी सरकार पर प्रहार करते हुए कहा–
"कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि व उत्तम होता है।" (सत्यार्थप्रकाश)
'स्वदेशीय राज्य' शब्द का प्रथम प्रयोग महर्षि दयानन्द जी ने किया तथा उनके इस आह्वान पर लाखों क्रान्ति वीरों ने इस देश को स्वतन्त्र कराने का अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।
वंदे मातरम्।
भारत माता की जय।


यह प्रसंग सन् 1873 कलकत्ता का हैं, तत्कालीन वायसराय 'लार्ड नार्थ ब्रुक' एवं गवर्नर जनरल ने महर्षि दयानन्द से निवेदन किया कि–
स्वामीजी! अपने व्याख्यानों के आरम्भ में जो प्रार्थना आप किया करते हैं, उसमें भारत देश पर अखण्ड... ..अंग्रेजी शासन के लिए प्रार्थना करें।
श्री मान् जी! मैं तो ईश्वर से नित्य सायं-प्रात: उसी की अपार कृपा से इस देश को विदेशियों की दासता से मुक्ति मिले, यही प्रार्थना करता हूँ।
वनवासियों, नारी-जाति और अछूतों को दयानन्द ने जनेऊ पहनाना शुरू किया।
भगवान् के सभी बच्चे हैं। औरत हो या कोई छोटी जाति वाला – सबको शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार हैं।
लोगों को बन्दी बनाने नहीं आया– स्वामी दयानन्द की हत्या करने के इरादे से उन्हें पान में जहर देने वाले अपराधी को कस्बे के तहसीलदार ने कैद कर लिया और स्वामीजी के सामने ले आये।
जैसा नाम वैसे गुण।
सैयद साहब, कृपा करके इसे छोड़ दे। मैं तो लोगों को मुक्त कराने आया हूँ, बंधन में डालने नहीं।
स्वामीजी ने महिलाओं को वेद पढ़ने, यज्ञ करने, सामाजिक बुराइयों के विरूद्ध संघर्ष करने का सर्व प्रथम आह्वान किया।
ओ३म्


उन्होंने अनेक नौजवानों को विदेशी वस्त्र त्यागने का उपदेश दिया।
स्वामीजी ने श्यामजी कृष्ण वर्मा को लन्दन में संस्कृत पढ़ाने भेजा, जो इण्डिया हाउस में वीर सावरकर, मदन लाल धींगड़ा के गुरु बने तथा एक सेठ से छात्र-वृति भिजवाते रहे।
वीर सावरकर
जय हिन्द
अपने देश की गरीबी के कारण हुई दुर्दशा स्वामी दयानन्द सरस्वती से नहीं देखी गई।
आह ! मेरे देश की माँ अपने मरे हुए बच्चे के शरीर से कफ़न तक उतार रही हैं। हे ईश्वर ! यह कैसी गरीबी?
नहीं, ईश्वर इतना अन्यायी नही हो सकता। सत्य की खोज के अलावा अब मुझे कहीं शांति नहीं मिलेगी।
अंग्रेजों के अत्याचारों व देश में फैली गरीबी से वे खिन्न थे। देश गुलाम था।
आर्यसमाज की स्थापना–
वेद ईश्वर की वाणी हैं। हमें वेदानुसार जीवन यापन करना चाहिये। श्रीराम, श्री कृष्ण हमारे महापुरुष हैं, वे भगवान् नहीं।
10 अप्रैल सन् 1875 को उन्होंने बम्बई में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना की तथा बाद में आर्यसमाज के दस नियम भी बनाए।


स्वामीजी ने दिल्ली में ब्रह्मसमाज के सूत्रधार केशव चन्द्रसेन, बाबू नवीन चन्द्रराय, सुधार वादी मुस्लिम नेता सर सैयद अहमद ख़ाँ, बाबू हरीश चन्द्र चिन्तामणि, कन्हैयालाल अलखधारी और मुन्शी इन्द्रमणि आदि महानुभवों की संगोष्ठी बुलाकर उनसे विचार विमर्श किया।
धर्म के नाम पर फैले वैर-विरोध के कारण समाज व राष्ट्र की दुर्दशा हो रही हैं। हमें धर्म के मर्म को समझना चाहिए।
जो बातें सब धर्मों में एक जैसी हैं, हम सब उनको स्वीकार करके धार्मिक एकता के साथ राष्ट्रीय एकता भी बनायें।
महर्षि के 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना से अनेक नौजवान वैदिक धर्म में दीक्षित होकर स्वसंस्कृति, स्वराज्य संघर्ष के लिए तैयार होने लगे।
प्रचार हेतु स्वामीजी जोधपुर गये। वहाँ जोधपुर नरेश को नन्ही नाम की नाचने वाली के साथ देखा तो स्वामीजी खिन्न हो उठे।
भला एक राजा का नाचने वाली से कैसा सम्बन्ध?
इस फकीर का मुँह बन्द करना होगा।
स्वामीजी! यह रहा आपका दूध।
अंग्रेजों व नन्ही जान के षड़यन्त्र से रसोइये ने दूध में जहर मिला कर स्वामीजी को दे दिया।

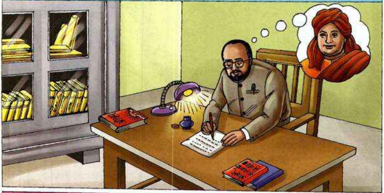

स्वामीजी के पूरे शरीर से ज़हर फूटने लगा अंततः रसोइये को अपनी ग़लती महसूस हुई, उसने स्वामीजी के पास जाकर माफ़ी माँगी।
मुझे क्षमा कर दीजिए स्वामीजी! मैंने आपके दूध में ज़हर मिला दिया था।
ये तूने क्या किया? वेद का कार्य अधूरा ही रह गया। जो होना था हो गया, तू अब ये पैसा ले और यहाँ से चला जा, नहीं तो राजा तुझे मृत्यु दण्ड दे देंगे।
अजमेर में 30 अक्तूबर सन् 1883 ई. को अत्यन्त कष्ट-दायक स्थिति होते हुऐ भी प्रसन्नचित्त योग-मुद्रा में प्राण त्यागते देख गुरुदत्त 'नास्तिक युवक' का जीवन ही पलट गया वह वैदिक धर्म का दीवाना 'पं. गुरुदत्त विद्यार्थी' बन गया।
कार्त्तिक मास अमावस्या 30 अक्तूबर 1883 के दिन अंग्रेज डॉ. न्यूमैन ने स्वामीजी को इतनी कष्टदायक स्थिति में शान्त-चित्त देखकर कहा था–
धैर्य का ऐसा धनी धरती पर मैंने आज तक नहीं देखा।
सायंकाल 6 बजे का समय था, स्वामीजी ने सभी भक्त जनों को आदेश दिया कि वे उनके पीछे खड़े हो जाएँ। फिर स्वामी जी ने मंत्रपाठ किया। ओ३म् की ध्वनि गुंजायमान की और स्वयं करवट ली फिर श्वास को सदा के लिए बाहर निकाल दिया।
ओ३म्
ईश्वर पर पूर्ण विश्वास रखने वाले इस महान् संन्यासी ने जीवन के अंतिम शब्द कहे थे–
हे प्रभु! तेरी इच्छा पूर्ण हो।
दीपावली की अंधियारी रात का प्रकाश का चमचमाता सितारा सदा के लिए अस्त हो गया।


पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा
पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म गुजरात प्रांत के माण्डवी उपनगर में 4 अक्टूबर, 1857 को हुआ था। इनके परिवार की आर्थिक दशा ठीक नहीं थी, अतः अर्थोपार्जन के लिये बम्बई जाना पड़ा। हाई-स्कूल में सर्वोच्च अंक प्राप्त किये। श्यामजी की प्रतिभा देख, बम्बई के एक धनाढ्य सेठ छबील-दास लल्लू भाई ने उन्हें प्रोत्साहित किया व उन्होंने अपनी लड़की भानुमती का ब्याह 1875 में उनके साथ कर दिया।
इसी वर्ष समाज सुधारक महर्षि दयानन्द का बम्बई में आगमन हुआ।
ओ३म्
वहाँ उन्होंने 10 अप्रैल 1875 को आर्यसमाज की स्थापना की।
महर्षि दयानन्द की विचारधारा का श्यामजी कृष्ण वर्मा पर गहरा प्रभाव पड़ा।
ईश्वर का मुख्य नाम 'ओ३म्' है। वह सच्चिदानन्द स्वरूप है... उसका कोई आकार नहीं है... वह हर जगह मौजूद है। ईश्वर सर्वशक्तिमान है, वह प्रत्येक जीव में मौजूद है।
गुरुदेव
वे महर्षि दयानन्द से प्रभावित हो कर उनके शिष्य बन गये।


श्यामजी कृष्ण वर्मा महाराणा उदयपुर के प्रथम दीवान बने। संस्कृत के धुरन्धर विद्वान् होने के कारण महर्षि दयानन्द ने इन्हें संस्कृत अध्यापन व देश की आजादी के लिये ऑक्सफार्ड यूनिवर्सिटी (इंग्लैंड) भेजा, वहाँ उनके द्वारा स्थापित 'इंडिया हाउस' (लंदन) में भारतीय क्रान्तिकारियों का केन्द्र बन गया।
इंडिया हाउस
(लंदन)


वहां उन्होंने 'इंडियन होमरूल सोसायटी' का गठन किया। लाला हरदयाल, मैडम कामा, लाला लाजपतराय, मदन लाल ढींगरा व गाँधी आदि देश भक्त वहां ठहरा करते थे। वीर सावरकर भी इस सोसायटी के सक्रिय सदस्य बन गये और संस्था के कार्य को बढ़ावा देने लगे। रविवार को सोसायटी की बैठक में क्रान्तिकारी साहित्य पढ़ा जाता व भारत भेजा जाता।
ओ३म्
इंडियन होमरूल सोसायटी
क्रान्तिकारी संगठन
(लंदन) 1905

इंग्लैण्ड जाकर भी श्यामजी कृष्ण वर्मा का स्वामी दयानन्द जी के साथ लगातार पत्र-व्यवहार होता रहा। स्वामी दयानन्द जहाँ श्यामजी का मार्गदर्शन करते वहीं वे इंग्लैण्ड के लोग भारत के बारे में क्या सोचते हैं, यह जानकारी भी श्यामजी से लेते रहते थे।



श्यामजी महर्षि का कितना मान करते थे इसका पता इसी बात से चल जाता है कि उन्होंने स्वामी जी के नाम से इंग्लैण्ड में छात्रवृति चला रखी थी।

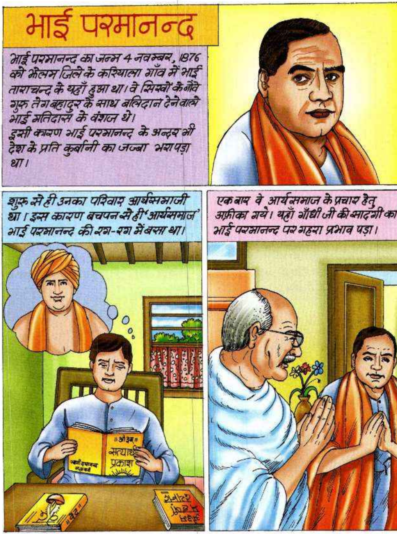


श्यामजी का संस्कृत भाषा व व्याकरण पर ऐसा अधिकार था कि वे संस्कृत में धारा प्रवाह भाषण देते थे।

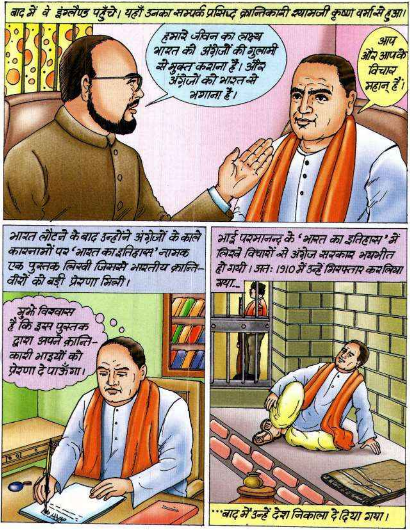

सन् 1905 में श्यामजी कृष्ण वर्मा ने 'दि इंडियन-सोशियॉलोजिस्ट' नामक एक अंग्रेजी पत्र निकाला जिससे वे लंदन में रहते हुए भी देश-विदेश के क्रान्तिकारियों को प्रेरणा देते रहते थे।
दि इंडियन सोशियॉलोजिस्ट
उनकी पत्नी भानुमती का क्रान्तिकारी कार्यों में पूर्ण रूप से सहयोग रहता था।
इण्डिया हाउस (भारत भवन) पर गुप्तचर विभाग की कड़ी नज़र रहा करती थी।
इंग्लैंड से अब क्रान्तिकारी गतिविधियाँ चलाना कठिन होता जा रहा था अतः श्यामजी कृष्ण वर्मा ने फ्रांस की राजधानी पेरिस व स्विट्जरलैंड के 'जिनेवा' नगर को क्रान्तिकारी गतिविधियों का केन्द्र बनाया।
आप आजादी लेने की ठान लेंगे तो वह मिलेगी, कोशिश नहीं करेंगे तो इस मुसीबत से हम कभी नहीं उभर सकते।
क्रान्तिकारी सोसायटी
(जिनेवा)

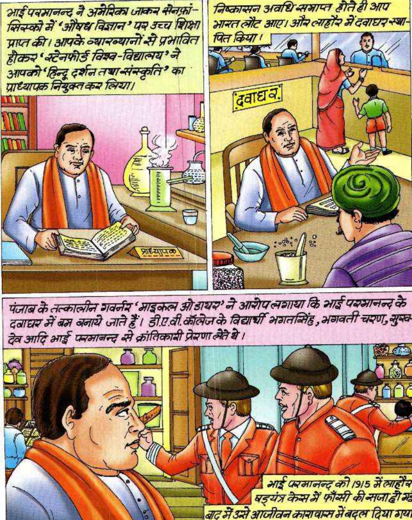

सन् 1927 में जब पं० जवाहर लाल नेहरू स्विट्ज़रलैण्ड गए तो श्यामजी कृष्ण वर्मा के दर्शनार्थ उनके निवास स्थान पर भी गए। उन्होंने उस महापुरुष को 'वृद्ध सिंह' की उपाधि दी थी।
मैं इस महापुरुष को 'वृद्ध सिंह' की उपाधि देता हूँ।
ओ३म्


प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय सैनिकों को उकसाने पर फ्रांस की सरकार ने श्यामजी कृष्ण वर्मा को राजद्रोही घोषित कर दिया। अत: उन्हें गुप्त रूप से स्विट्जरलैंड जाना पड़ा। निरन्तर संघर्ष करते-करते 73 वर्ष की आयु में 31 मार्च सन् 1930 को जिनेवा में भारत माँ का यह सच्चा सपूत इस संसार से सदा-सदा के लिए विदा हो गया।
उनका कथन था –
अत्याचार करने वाले से अत्याचार सहने वाला अधिक दोषी है।
ओ३म्



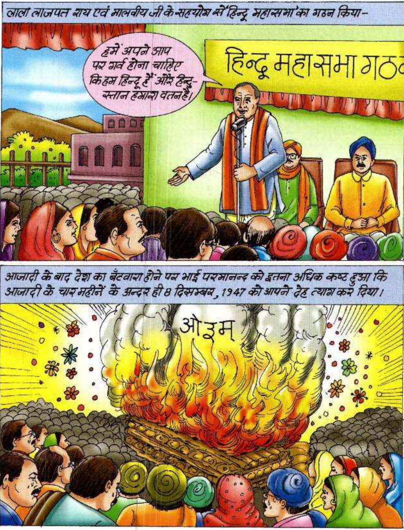
भाई परमानन्द
भाई परमानन्द का जन्म 4 नवम्बर, 1876 को झेलम जिले के करियाला गाँव में भाई ताराचन्द के यहाँ हुआ था। वे सिखों के नौवें गुरु तेग बहादुर के साथ बलिदान देने वाले भाई मतिदास के वंशज थे।
इसी कारण भाई परमानन्द के अन्दर भी देश के प्रति कुर्बानी का जज्बा भरा पड़ा था।
शुरू से ही उनका परिवार आर्यसमाजी था। इस कारण बचपन से ही 'आर्यसमाज' भाई परमानन्द की रग-रग में बसा था।
॥ ओ३म ॥
सत्यार्थ प्रकाश
॥ वेद ॥
एक बार वे आर्यसमाज के प्रचार हेतु अफ्रीका गये। वहाँ गाँधी जी की सादगी का भाई परमानन्द पर गहरा प्रभाव पड़ा।


बाद में वे इंग्लैण्ड पहुँचे। यहाँ उनका सम्पर्क प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा से हुआ।
हमारे जीवन का लक्ष्य भारत की अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराना है। और अंग्रेजों को भारत से भगाना है।
आप और आपके विचार महान् हैं।
भारत लौटने के बाद उन्होंने अंग्रेजों के काले कारनामों पर 'भारत का इतिहास' नामक एक पुस्तक लिखी जिससे भारतीय क्रान्तिवीरों को बड़ी प्रेरणा मिली।
मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक द्वारा अपने क्रान्तिकारी भाइयों को प्रेरणा दे पाऊँगा।
भाई परमानन्द के 'भारत का इतिहास' में लिखे विचारों से अंग्रेज सरकार भयभीत हो गयी। अत: 1910 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया...
...बाद में उन्हें देश निकाला दे दिया गया।

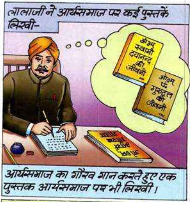

भाई परमानन्द ने अमेरिका जाकर सेनफ्रांसिस्को में 'औषध विज्ञान' पर उच्च शिक्षा प्राप्त की। आपके व्याख्यानों से प्रभावित होकर 'स्टेनफोर्ड विश्व-विद्यालय' ने आपको 'हिन्दु दर्शन तथा संस्कृति' का प्राध्यापक नियुक्त कर लिया।
प्राध्यापक
निष्कासन अवधि समाप्त होते ही आप भारत लौट आए। और लाहौर में दवाघर स्थापित किया।
दवाघर
पंजाब के तत्कालीन गवर्नर 'माइकल ओडायर' ने आरोप लगाया कि भाई परमानन्द के दवाघर में बम बनाये जाते हैं। डी.ए.वी. कॉलेज के विद्यार्थी भगतसिंह, भगवती चरण, सुखदेव आदि भाई परमानन्द से क्रांतिकारी प्रेरणा लेते थे।
भाई परमानन्द को 1915 में लाहौर
षड़यंत्र केस में फाँसी की सजा हो
बाद में उसे आजीवन कारावास में बदल दिया गया


भाई परमानन्द को अंडमान की जेल में कठोर यातनाएँ दी गईं। सी.एफ. ऐंड्रयूज एवं मालवीयजी के प्रयासों से आपको 1919 में जेल से मुक्ति मिली।
वन्दे मातरम्।
सटाक
सटाक


आपने जोधपुर में जाकर वहां राजपूत विद्यालय स्थापित किया।
राजपूत विद्यालय


लाला लाजपत राय एवं मालवीय जी के सहयोग से 'हिन्दू महासभा' का गठन किया–
हमें अपने आप पर गर्व होना चाहिए कि हम हिन्दू हैं और हिन्दुस्तान हमारा वतन है।
हिन्दू महासभा गठ
आजादी के बाद देश का बँटवारा होने पर भाई परमानन्द को इतना अधिक कष्ट हुआ कि आजादी के चार महीनें के अन्दर ही 8 दिसम्बर, 1947 को आपने देह त्याग कर दिया।
ओ३म

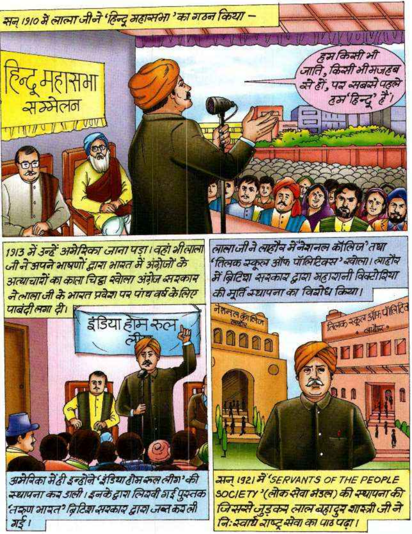

पंजाब केसरी
लाला लाजपतराय
लाला लाजपतराय का जन्म 28 जनवरी 1865 को गॉव ढोड़िग्राम (जगरांव) में हुआ उनके पिता लाला राधाकृष्ण सरकारी प्राइमरी स्कूल में अध्यापक थे। प्रन्द्रह वर्ष की आयु में ही उन्होंने पंजाब और कलकत्ता यूनिवर्सिटी से मैट्रिक परीक्षा पास कर ली। लाजपतराय का गवर्नमेंट कॉलिज लाहौर में दाखिला हो गया एम.ए. की पढ़ाई के साथ-साथ उन्होंने कानून की शिक्षा लेनी भी आरम्भ कर दी। शीघ्र ही वे मुख्त्यारी पास करके पहले जगरावां फिर हिसार और अन्त में लाहौर में सफल वकील बनकर पहुँचे और नगर के श्रेष्ठ वकीलों में गिने जाने लगे।
ओ३म्
लाला लाजपतराय जी आर्यसमाज को अपनी माता और महर्षि दयानन्द सरस्वती को अपना गुरु मानते थे।
सन् 1905 के कॉंग्रेस अधिवेशन में लाला लाजपतराय ने सिंह गर्जना कर दी –
आजादी हमारा अधिकार है, अंग्रेजों से भीख माँगने की वस्तु नहीं।
कांग्रेस अधि
1905
लाला लाजपत राय ने बंग-भंग विरोध आन्दोलन का पंजाब राज्य में नेतृत्व किया। इनके भाषणों की उग्र भाषा व तीखे तेवर देख अंग्रेज सरकार चिढ़ गई। अतः 16 मई, ...
भारत माता की जय।
...1907 को इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। लेकिन जनता के विरोध के कारण इनको शीघ्र छोड़ना पड़ा।


लालाजी ने आर्यसमाज पर कई पुस्तकें लिखी-
ओ३म् स्वामी दयानन्द की जीवनी
ओ३म् पं. गुरुदत्त की जीवनी
आर्यसमाज का गौरव गान करते हुए एक पुस्तक आर्यसमाज पर भी लिखी।


लाला लाजपत राय को देश निकाले का दण्ड मिला तो प्रसिद्ध आर्य नेता गुरुकुल काँगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी ने डट कर उसका विरोध किया। वहाँ से लौटकर आए तो स्वामी जी ने उन्हें...
ल कांगड़ी उत्सव
हरिद्वार
गुरुकुल के उत्सव पर बुलाया और पंजाब के दोनों सिंह भाई-भाई की तरह गले मिले।

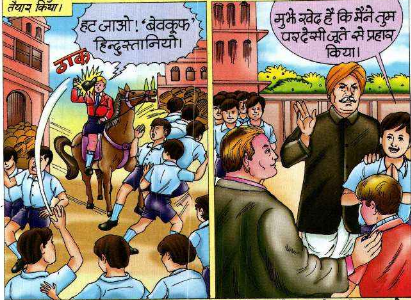

लाला लाजपत राय सन् 1882 अर्थात् 17 वर्ष की आयु में ही आर्यसमाज से जुड़ गए थे। डी.ए.वी. को खड़ा करने में लाला जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। यहाँ तक कि प्रारम्भ में बनी 19 सदस्यों वाली डी.ए.वी. कमेटी के सदस्य रहे तथा 1882 से 1906 तक वे कमेटी के मंत्री व उपप्रधान रहे।
D.A.V. कमेटी सं


डी.ए.वी. के महत्वपूर्ण स्तम्भ पं. गुरुदत्त — विद्यार्थी आपके सहपाठी, मित्र व एक उत्तम मार्ग दर्शक रहे। पं. गुरुदत्त जी ने लालाजी को 13-4-1887 को 8 पृष्ठ का एक महत्वपूर्ण पत्र लिखा। लाला जी ने भी खुले हृदय से अपना दोष स्वीकार करते हुए लिखा—
ए परलोक वासी पं. गुरुदत्त...तुम आज भी मुझे उचित मार्ग-दर्शन प्रदान करो।

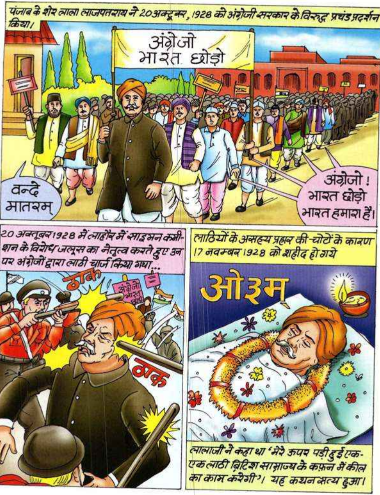

सन् 1910 में लाला जी ने 'हिन्दू महासभा' का गठन किया –
हिन्दू महासभा सम्मेलन
हम किसी भी जाति, किसी भी मजहब के हों, पर सबसे पहले हम 'हिन्दू' हैं।
1913 में उन्हें अमेरिका जाना पड़ा। वहां भी लाला जी ने अपने भाषणों द्वारा भारत में अंग्रेजों के अत्याचारों का काला चिट्ठा खोला अंग्रेज सरकार ने लाला जी के भारत प्रवेश पर पांच वर्ष के लिए पाबंदी लगा दी।
इंडिया होम रूल लीग
अमेरिका में ही इन्होंने 'इंडिया होम रूल लीग' की स्थापना कर डाली। इनके द्वारा लिखी गई पुस्तक 'तरुण भारत' ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त कर ली गई।
लाला जी ने लाहौर में "नेशनल कॉलिज' तथा 'तिलक स्कूल ऑफ पॉलिटिक्स' खोला। लाहौर में ब्रिटिश सरकार द्वारा महारानी विक्टोरिया की मूर्ति स्थापना का विरोध किया।
नेशनल कॉलिज लाहौर
तिलक स्कूल ऑफ पॉलिटिक्स • लाहौर •
सन् 1921 में 'SERVANTS OF THE PEOPLE SOCIETY' (लोक सेवा मंडल) की स्थापना की जिससे जुड़कर लाल बहादुर शास्त्री जी ने निःस्वार्थ राष्ट्र सेवा का पाठ पढ़ा।

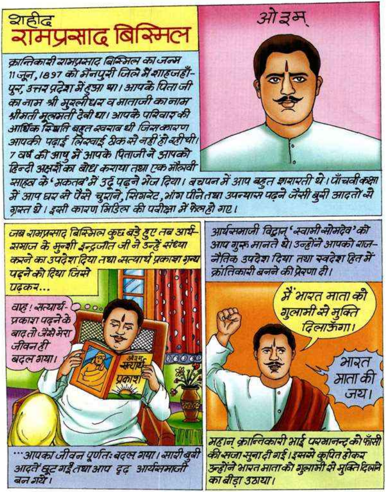

लाला लाजपतराय ने 'THE PEOPLE OF YOUNG INDIA' तथा 'YOUNG INDIA' अंग्रेजी एवं 'वन्दे मातरम्' उर्दू के पत्रों का प्रकाशन आरंभ कर दिया। यह पत्र जनता में जागृति लाने के सशक्त माध्यम बने।
YOUNG INDIA
THE PEOPLE OF YOUNG INDIA
वन्देमातरम्
एक बार की बात है। लाहौर के टाउन हॉल में महारानी विक्टोरिया की हीरक जयन्ती के अवसर पर सरकारी अधिकारियों ने सभा बुलायी थी। उन्होंने आपस में साठ-गांठ करी की महारानी की मूर्ति शहर में उचित स्थान पर लगायी जाये। उन लोगों को आशा थी कि सभा में सब उनकी बात का समर्थन करेंगें। परन्तु उसके विपरीत यह आवाज़ उठी की उन पैसों का उपयोग अनाथों की सहायता में किया जाये। सरकारी पिट्ठू यह सुनते ही सभा से उठ खड़े हुये।
महारानी विक्टोरिया की हीरक जयन्ती के अवसर पर हमें उनकी मूर्ति उचित स्थान पर लगानी चाहिए।
नहीं! हमें उन पैसों को अनाथों की सहायता में लगाना चाहिए।
अंग्रेजी सरकार के विरोध में आवाज़ उठाने वाले इन लोगों के मुखिया थे, लाला लाजपतराय।

लाला लाजपतराय ने अनेक संस्थाएं चलायी, उनमें डी.ए.वी कॉलिज लाहौर का एक किस्सा मशहूर है। कॉलिज के छात्र होस्टल से कॉलिज तक एक पंक्ति बांधकर जाया करते थे। छात्र नहीं चाहते थे कि उनकी पंक्ति को तोड़कर बीच में से कोई निकले। परंतु कॉलिज और होस्टल के बीच एक अंग्रेज वकील की कोठी थी। उनका एक उन्नीस वर्षीय लड़का था, उसे घुड़सवारी का शौक था। एक दिन अंग्रेज लड़का पंक्ति बाँध कर आते छात्रों के बीच में अपना घोड़ा ले आया और छात्र घोड़े की चपेट में ना आ जाये इसलिए पंक्ति तोड़कर इधर-उधर बिखर गये। वकील साहब अपने लड़के की करतूत से बड़े खुश हुए। दूसरे दिन अंग्रेज लड़के ने फिर वही हरकत की, उसे देख छात्रों के मॉनीटर ने ऊँचे स्वर में उसे रोकना चाहा। किन्तु वह तो हिन्दुस्तानियों को गाली देता हुआ अपने घोड़े के साथ आगे बढ़ा। तभी लोहे की नाल जड़ा जूता अंग्रेज लड़के के मुंह पर आ लगा और वह रोता-चिल्लाता अपने वकील पिता के पास पहुँचा। अपने पुत्र की दुर्दशा देखकर वकील गुस्से में शिकायत लेकर लाला लाजपतराय के पास पहुँचा। लालाजी ने छात्रों को बुलाकर जांच की, फिर अफसोस जाहिर करने का फार्मूला तैयार किया।



फार्मूला था कि कॉलिज का छात्र वकील साहब के लड़के के सामने इन शब्दों में खेद प्रकट करे... 'मुझे खेद है कि मैंने तुम परदेसी जूते से प्रहार किया।', पता नहीं, वकील साहब लालाजी की इस शाब्दिक चतुराई को समझे या नहीं, पर हाँ जाते समय लालाजी का आभार मानना नहीं भूले।


पंजाब के शेर लाला लाजपतराय ने 20 अक्टूबर, 1928 को अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध प्रचंड प्रदर्शन किया।
अंग्रेजो भारत छोड़ो
वन्दे मातरम्
अंग्रेजो ! भारत छोड़ो भारत हमारा हैं।
20 अक्तूबर 1928 में लाहौर में साइमन कमीशन के विरोध जलूस का नेतृत्व करते हुए उन पर अंग्रेजों द्वारा लाठी चार्ज किया गया...
ठाक
ठक
लाठियों के असह्य प्रहार की-चोटें के कारण 17 नवम्बर 1928 को शहीद हो गये
ओ३म
लालाजी ने कहा था 'मेरे ऊपर पड़ी हुई एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के कफ़न में कील का काम करेगी'। यह कथन सत्य हुआ।


शहीद
रामप्रसाद बिस्मिल
ओ३म्
क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म 11 जून, 1897 को मैनपुरी जिले में शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। आपके पिता जी का नाम श्री मुरलीधर व माताजी का नाम श्रीमती मूलमती देवी था। आपके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी जिस कारण आपकी पढ़ाई लिखाई ठीक से नहीं हो रही थी। 7 वर्ष की आयु में आपके पिताजी ने आपको हिन्दी अक्षरों का बोध कराया तथा एक मौलवी साहब के 'मकतब' में उर्दू पढ़ने भेज दिया। बचपन में आप बहुत शरारती थे। पाँचवी कक्षा में आप घर से पैसे चुराने, सिगरेट, भांग पीने तथा उपन्यास पढ़ने जैसी बुरी आदतों से ग्रस्त थे। इसी कारण मिडिल की परीक्षा में फेल हो गए।
जब रामप्रसाद बिस्मिल कुछ बड़े हुए तब आर्य-समाज के मुन्शी इन्द्रजीत जी ने उन्हें संध्या करने का उपदेश दिया तथा सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ पढ़ने को दिया जिसे पढ़कर...
वाह! सत्यार्थ-प्रकाश पढ़ने के बाद तो जैसे मेरा जीवन ही बदल गया।
सत्यार्थ प्रकाश
...आपका जीवन पूर्णतः बदल गया। सारी बुरी आदतें छूट गईं तथा आप दृढ़ आर्यसमाजी बन गये।
आर्यसमाजी विद्वान् 'स्वामी सोमदेव' को आप गुरू मानते थे। उन्होंने आपको राज-नैतिक उपदेश दिया तथा स्वदेश हित में क्रांतिकारी बनने की प्रेरणा दी।
मैं भारत माता को गुलामी से मुक्ति दिलाऊँगा।
भारत माता की जय।
महान् क्रान्तिकारी भाई परमानन्द को फाँसी की सजा सुना दी गई। इससे कुपित होकर उन्होंने भारत माता को गुलामी से मुक्ति दिलाने का बीड़ा उठाया।


रामप्रसाद बिस्मिल निष्ठावान् आर्यसमाजी थे। उन्होंने आर्यकुम्भ सभा बनाकर युवकों को वैदिक धर्म से जोड़ा। यहाँ तक कि उन्होंने वैदिक धर्म की सच्चाई सिद्ध करने के लिए आर्य विद्वानों को बुलाकर एक शास्त्रार्थ भी करवाया।
ओ३म्
आर्य कुम्भ महायज्ञ
'शास्त्रार्थ'
रामप्रसाद के पिता को उनका आर्यसमाजी होना अच्छा नहीं लगा। उन्होंने पुत्र से कहा कि-
रामप्रसाद! तू या तो आर्यसमाज छोड़ दे या घर छोड़ दे।
धर्म धुन का धनी रामप्रसाद घर छोड़ कर चला गया लेकिन आर्यसमाज न छोड़ा। कई दिन बाद उनके पिताजी ही उन्हें घर लौटा कर लाए।
जेल में रहकर भी रामप्रसाद बिस्मिल नियमित रूप से संध्या, ईश्वर का ध्यान व यज्ञ करते थे। कालकोठरी में भी उनके इस व्यवहार का जेल कर्मचारियों पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे इन्हें गुरुजी कहते थे। जिस यज्ञकुण्ड में वे यज्ञ करते थे, वह आज भी हमारी ऐतिहासिक व सांस्कृतिक धरोहर है।
?
ओ३म्


रामप्रसाद बिस्मिल ने 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' संस्था के माध्यम से क्रांतिकारी गतिविधियाँ आरम्भ की ।
बिस्मिल अच्छे लेखक थे उन्होंने अमेरिका को स्वतंत्रता कैसे मिली ?, मैनपुरी षड्यंत्र केस के नेता पं. गैंदालाल दीक्षित, सूफी अम्बा प्रसाद, देशमान्य बाबू मोतीलाल घोष, मन की लहर, स्वदेशी रंग, क्रांतिकारी जीवन तथा आत्म-चरित्र जैसी पुस्तकें लिखीं। इनमें से अधिकतर ब्रिट्रिश सरकार द्वारा जब्त कर ली गई।
अमेरिका को स्वतंत्रता कैसे मिली
मैनपुरी षड्यंत्र केस के नेता पं. गेंदालाल दीक्षित
सूफी अम्बा प्रसाद
देशमान्य बाबू मोतीलाल घोष
मन की लहर
स्वदेशी रंग
कांतिकारी जीवन
आत्म चरित्र
सत्यार्थ प्रकाश

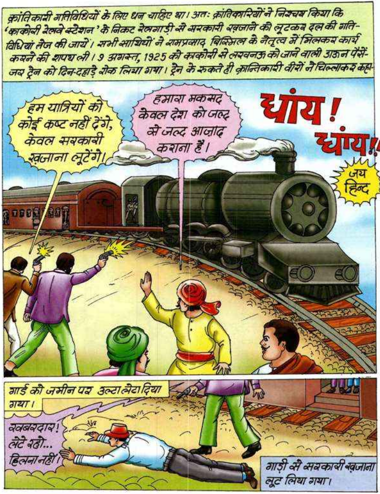
रामप्रसाद बिस्मिल व अशफ़ाक उल्ला खां के परस्पर अत्यन्त प्रेम पूर्ण सम्बन्ध थे। अशफ़ाक उन्हें भाई साहब नहीं बल्कि 'राम' कहकर पुकारते थे। क्योंकि वे अशफ़ाक के बड़े भाई के साथ पढ़ते थे। एक बार अशफ़ाक बीमार पड़ गये, उन्हें तेज बुखार था। वह बुखार के कारण बार-बार राम! राम! कह कर पुकारने लगे। परिवार के सदस्य यह शब्द सुनकर भौंचक्के व हैरान रह गये कि ये अल्लाह-अल्लाह बोलने की जगह राम-राम क्यों बोल रहे हैं। फिर उनके पड़ौसी हिन्दुओं ने उनके घर वालों को बताया कि वे बेहोशी के हालत में राम-राम कहकर अपने दोस्त 'रामप्रसाद बिस्मिल को पुकार रहे हैं'। बिस्मिल को बुलाया गया। बिस्मिल ने आकर अशफ़ाक को पुकारा, अशफ़ाक की आँखें खुल गई। अपने मित्र को देखकर वे भाव विभोर हो गये। तब परिवारजन राम-राम के भेद को समझे।





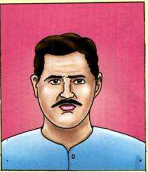
अंग्रेज सरकार क्रांतिकारियों के पीछे पड़ गई, एक साथी की गद्दारी के कारण रामप्रसाद बिस्मिल को अन्य साथियों सहित गिरफ्तार कर लिया गया। इस काकोरी षड्यंत्र केस में चार क्रांतिवीरों को फाँसी की सजा घोषित हुई। राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी को 17 दिसम्बर एवं रामप्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रोशन सिंह एवं अशफाक उल्ला खाँ को 19 दिसम्बर, 1927 को फाँसी पर लटकाया गया।

रामप्रसाद बिस्मिल बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे शायर भी थे। उनके "सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में हैं" गीत ने क्रांतिवीरों में एक नया उत्साह एवं देश के लिए मर मिटने का संकल्प पैदा कर दिया।

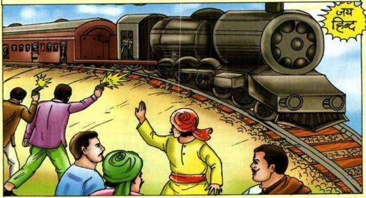

क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए धन चाहिए था। अतः क्रांतिकारियों ने निश्चय किया कि 'काकोरी रेलवे स्टेशन' के निकट रेलगाड़ी से सरकारी ख़जाने को लूटकर दल की गतिविधियां तेज की जायें। सभी साथियों ने रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में मिलकर कार्य करने की शपथ ली। 9 अगस्त, 1925 को काकोरी से लखनऊ को जाने वाली डाऊन पैसेंजर ट्रेन को दिन-दहाड़े रोक लिया गया। ट्रेन के रुकते ही क्रान्तिकारी वीरों ने चिल्लाकर कहा-
हम यात्रियों को कोई कष्ट नहीं देंगे, केवल सरकारी ख़जाना लूटेंगे।
हमारा मकसद केवल देश को जल्द से जल्द आज़ाद कराना है।
धांय!
धांय!!
जय हिन्द
गार्ड को जमीन पर उल्टा लेटा दिया गया।
खबरदार! लेटे रहो... हिलना नहीं।
गाड़ी से सरकारी ख़जाना लूट लिया गया।

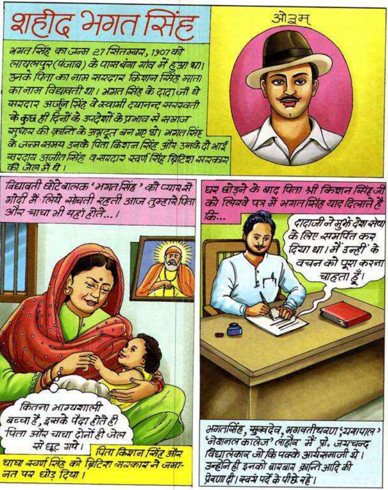

बिस्मिल की वसीयत—
आत्मकथा
रामप्रसाद बिस्मिल
'रामप्रसाद बिस्मिल' उन्होंने मौत के साये में अपनी आत्मकथा लिखी तथा फाँसी के फन्दे पर झूल गए ताकि उनके देशवासी सुख के हिंडोले में झूल सकें। उन्होंने अपनी सम्पूर्ण जवानी की आहुति अंग्रेजी सरकार सेटक्कर लेने में दे दी ताकि हम स्वराज्य का सुख भोग सकें। उन्होंने अनगिनत दिन भूखे-प्यासे रहकर काटे ताकि उनके देशवासी कभी भूखे न सोएं।
तो क्या यह हमारा परम कर्त्तव्य नहीं है कि हम स्वयं उनकी आत्मकथा पढ़ें और भावी पीढ़ी को भी पढ़ाएँ। उनके विचारों का प्रचार करें।
राम प्रसाद बिस्मिल
अशफ़ाक उल्ला खाँ
राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी
ठाकुर रोशन सिंह
मरते 'बिस्मिल', 'रोशन', 'लहरी', अशफ़ाक अत्याचार से।
होंगे पैदा सैंकड़ों, इनकी रुधिर की धार से॥

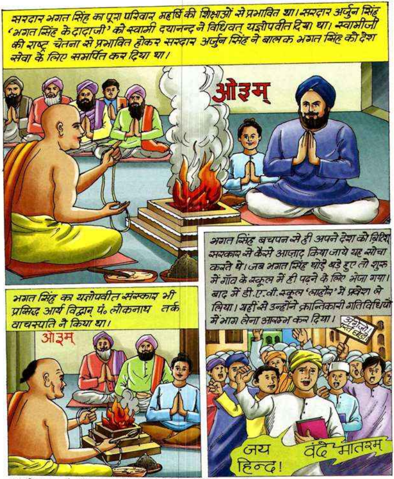
ठाकुर रोशनसिंह



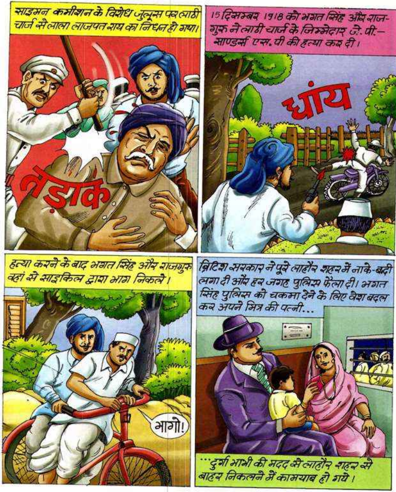
रोशन सिंह का जन्म सन् 1891 में शाहँापुरा जिले के नावादा गाँव में एक राजपूत परिवार में हुआ था। रोशनसिंह भी आर्य समाज से प्रभावित थे। ब्रिटिश सरकार ने बरेली कांड में इन्हें झूठा फंसा दिया और इन्हें दो वर्ष की कठोर कारावास की सजा दे डाली। कारावास की सजा दे डाली। कारावास ने ही वीर रोशनसिंह के अन्दर छिपे, क्रान्किारी को रोशन कर दिया। 1923 में जेल से मुक्त होते ही यह रामप्रसाद बिस्मिल, शचिन्द सान्याल एवं असफाकउल्ला खां आदि क्रान्तिकारी वीरों के दल में शामिल हो गए। 9 अगस्त, 1925 को 'काकोरी कांड' खजाना लूटने में यह भी शामिल थे। इस ट्रेन में डकैती में शामिल सभी क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया। इनमें रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खां, राजेन्द्र लाहड़ी व ठाकुर रोशन सिंह को फाँसी की सजा सुना दी गई। आर्य समाजी होने के कारण 19 दिसम्बर, 1927 के दिन फाँसी के तख्ते पर फंदा लगने से पहले ठाकुर रोशन सिंह ने पहले लम्बें स्वर में 'ओ...म्' का उच्चारण किया था। उनका अन्त्येष्टि संस्कार भी आर्यसमाज की विधि से हुआ था। 'वीर रोशन सिंह शायर भी थे, फाँसी के छः दिन पहले उन्होंने अपने एक मित्र को पत्र में लिखा था–''जिन्दगी ज़िन्दादिली को जान ए रोशन, वरना कितने मरे और पैदा होते जाते हैं।''



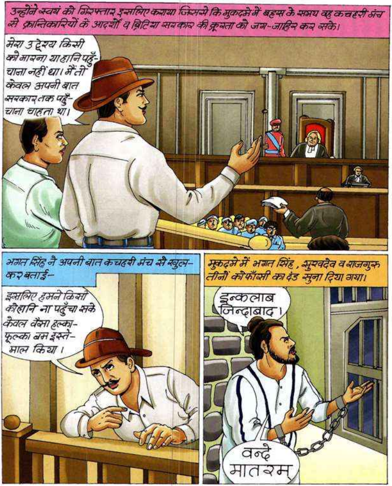

शहीद भगत सिंह
ओ३म्
भगत सिंह का जन्म 27 सितम्बर, 1907 को लायलपुर (पंजाब) के पास बंगा गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह माता का नाम विद्यावती था। भगत सिंह के दादा जी थे सरदार अर्जुन सिंह वे स्वामी दयानन्द सरस्वती के कुछ ही दिनों के उपदेशों के प्रभाव से समाज सुधार की क्रान्ति के अग्रदूत बन गए थे। भगत सिंह के जन्म समय उनके पिता किशन सिंह और उनके दो भाई सरदार अजीत सिंह व सरदार स्वर्ण सिंह ब्रिटिश सरकार की जेल में थे।
विद्यावती छोटे बालक 'भगत सिंह' को प्यार से गोदी में लिये सोचती रहती आज तुम्हारे पिता और चाचा भी यहां होते...।
कितना भाग्यशाली बच्चा है, इसके पैदा होते ही पिता और चाचा दोनों ही जेल से छूट गये।
पिता किशन सिंह और चाचा स्वर्ण सिंह को ब्रिटिश सरकार ने जमानत पर छोड़ दिया।
घर छोड़ने के बाद पिता श्री किशन सिंह जी को लिखे पत्र में भगत सिंह याद दिलाते हैं कि...
दादाजी ने मुझे देश सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। मैं उन्हीं के वचन को पूरा करना चाहता हूँ।
भगतसिंह, सुखदेव, भगवतीचरण, 'यशपाल' 'नेशनल कालेज' लाहौर में प्रो. जयचन्द विद्यालंकार जो कि पक्के आर्यसमाजी थे। उन्होंने ही इनको बारबार क्रान्ति आदि की प्रेरणा दी। स्वयं पर्दे के पीछे रहे।

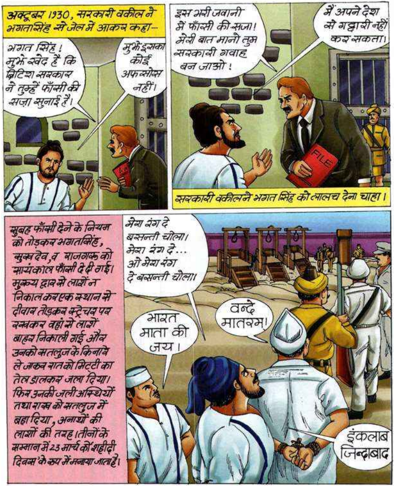


* प्रसिद्ध यज्ञ प्रार्थना "यज्ञरूप प्रभो हमारे" पं० लोकनाथ जी की ही रचना थी।


साइमन कमीशन के विरोध जुलूस पर लाठी चार्ज से लाला लाजपत राय का निधन हो गया।
तड़ाक
15 दिसम्बर 1918 को भगत सिंह और राजगुरु ने लाठी चार्ज के जिम्मेदार जे. पी.- साण्डर्स एस. पी की हत्या कर दी।
धांय
हत्या करने के बाद भगत सिंह और राजगुरु वहां से साइकिल द्वारा भाग निकले।
भागो!
ब्रिटिश सरकार ने पूरे लाहौर शहर में नाके-बंदी लगा दी और हर जगह पुलिस फैला दी। भगत सिंह पुलिस को चकमा देने के लिए वेश बदल कर अपने मित्र की पत्नी...
...दुर्गा भाभी की मदद से लाहौर शहर से बाहर निकलने में कामयाब हो गये।


भगत सिंह 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' के सक्रिय सदस्य थे। वे कलकत्ता में क्रान्तिकारी 'जतिन दास' से मिले-
जतिन दा! मुझे बम बनाने का तरीका सिखाओ।
मैं खुशी से आपकी मदद करूँगा।
भगत सिंह ने क्रान्तिकारी साथियों के साथ मिल-कर अंग्रेज सरकार के बहरे कानों तक अपनी आवाज पहुँचाने के लिए संसद हाल में बम फैंकने की योजना बनाई-
इस बहरी अंग्रेज सरकार के कानों तक अपनी बात पहुँचाने का यही एक रास्ता है।
8 अप्रैल, 1929 की घटना उनके जीवन की महानतम घटना कही जा सकती है। भगत सिंह ने बटुकेश्वर दत्त के साथ संसद हाल में अंग्रेज सरकार को चेतावनी देने के लिए बम फैंका, साथ में पर्चे भी फैंके और अपनी गिरफ्तारी दी।
इन्कलाब जिन्दाबाद!
धड़ाम
जय हिन्द!


उन्होंने स्वयं की गिरफ्तार इसलिए कराया जिससे कि मुकदमें में बहस के समय वह कचहरी मंच से क्रान्तिकारियों के आदर्शों व ब्रिटिश सरकार की क्रूरता को जग-जाहिर कर सके।
मेरा उद्देश्य किसी को मारना या हानि पहुँचाना नहीं था। मैं तो केवल अपनी बात सरकार तक पहुँचाना चाहता था।
भगत सिंह ने अपनी बात कचहरी मंच से खुलकर बताई-
इसलिए हमने किसी को हानि ना पहुँचा सके केवल वैसा हल्का-फूल्का बम इस्तेमाल किया।
मुकदमे में भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु तीनों को फाँसी का दंड सुना दिया गया।
इन्कलाब जिन्दाबाद।
वन्दे मातरम्


अक्टूबर 1930, सरकारी वकील ने भगतसिंह से जेल में आकर कहा—
भगत सिंह! मुझे खेद है कि ब्रिटिश सरकार ने तुम्हें फाँसी की सज़ा सुनाई है।
मुझे इसका कोई अफसोस नहीं।
इस भरी जवानी में फाँसी की सजा! मेरी बात मानो तुम सरकारी गवाह बन जाओ!
मैं अपने देश से गद्दारी नहीं कर सकता।
सरकारी वकील ने भगत सिंह को लालच देना चाहा।
सुबह फाँसी देने के नियम को तोड़कर भगतसिंह, सुखदेव, व राजगुरु को सायंकाल फाँसी दे दी गई। मुख्य द्वार से लाशें न निकालकर एक स्थान से दीवार तोड़कर स्ट्रेचर पर रखकर वहां से लाशें बाहर निकाली गई और उनको सतलुज के किनारे ले जाकर रात को मिट्टी का तेल डालकर जला दिया। फिर उनकी जली अस्थियों तथा राख को सतलुज में बहा दिया, अनाथों की लाशों की तरह। तीनों के सम्मान में 23 मार्च को 'शहीदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला। मेरा रंग दे... ओ मेरा रंग दे बसन्ती चोला।
भारत माता की जय।
वन्दे मातरम्।
इंकलाब जिन्दाबाद



क्रान्तिकारी सुखदेव

सुखदेव का जन्म लायलपुर पंजाब में 15 मई 1907 में हुआ था। जन्म होने से तीन मास पहले ही पिता जी संसार से चल बसे। आपका पालन-पोषण चाचा अचिन्तराम ने किया। आपका परिवार आर्यसमाजी था। उसके कारण आपको आर्य समाज के प्रति श्रद्धा थी। उसी से आपको देशभक्ति के संस्कार मिले। आप आर्यसमाज के सत्संग में अवश्य जाते थे हवन संध्या और योगाभ्यास में भी आपकी रुचि थी। जब सुखदेव 16 वर्ष के थे तब माँ द्वारा विवाह की बात करने पर सुखदेव ने कह दिया कि 'माता ! मैं शादी की घोड़ी पर नहीं, क्रान्ति की घोड़ी पर चढूंगा।' 'नेशनल कालेज, लाहौर' में प्रवेश लेने के बाद इनको भगतसिंह, यशपाल जैसे क्रान्तिकारी साथी मिल गये। वहाँ इनके मन में क्रान्ति की भावना सुदृढ़ हो गई। प्रो. जयचन्द विद्यालंकार की प्रेरणाओं ने उस भावना को और मजबूत कर दिया।

साइमन कमीशन के आगमन पर विरोध की योजना बनाने के अपराध में आपको गिरफ्तार किया गया किन्तु एक दिन बाद ही छोड़ दिया। साण्डर्स हत्याकाण्ड या 'लाहौर षड़यंत्र' में 15 अप्रैल, 1919 को श्री किशोरी और प्रेमनाथ के साथ आपको गिरफ्तार कर लिया। चौबीस वर्ष की आयु में 23 मार्च, 1931 को भगतसिंह व राजगुरु के साथ आपको भी सायंकाल फांसी पर लटका दिया गया। तथा रात को ही शवों को जेल से चुपचाप निकालकर सतलुज के किनारे लेजाकर मिट्टी का तेल डालकर जला दिया और लावारिशों की तरह अस्थियों को प्रवाहित कर दिया।



भाई बालमुकुन्द गुप्त



भाई बालमुकुन्द गुप्त का जन्म सन् 1885 में अमर बलिदानी भाई मतिदास के वंश में पंजाब के चकवाल गाँव में हुआ था। देश और धर्म पर बलिदान होने कि भावना भाई बालमुकुन्द को अपने पूर्वजों से विरासत में मिली थी। उन्होंने लाहौर से शिक्षा-स्नातक की परीक्षा में उच्च स्थान पाप्त किया। वह लाहौर से अवधबिहारी के साथ कॉलेज में शिक्षक नियुक्त हो गये। आर्यसमाजी परिवार होने के कारण वे भी आर्य समाजी व आर्य समाज से प्रभावित थे।

भाई बालमुकुन्द महान, स्वाधीनता सेनानी, इतिहासकार व आर्यसमाजी मनीषी भाई परमानन्द के चचेरे भाई थे। भाई परमानन्द ने लाहौर में पहले ही युवकों में भारतीय स्वतंत्रा का मंत्र फूँकने का अभियान छेड़ा हुआ था। दिनांक 23 दिसंबर, 1912 का दिल्ली में बसंतकुमार विश्वास ने वायसराय लार्डहार्डिंग पर बम फेंका था और वहाँ जो अन्य दो व्यक्ति बुर्का पहने स्त्री वेष में वसंतकुमार के साथ थे वे भाई बालमुकुन्द एवं अवधबिहारी ही थे। फरवरी, 1914 में इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। दिनांक 8 मई, 1915 को मास्टर अमीचन्द अवध-बिहारी के साथ भाई बालमुकुन्द को भी दिल्ली में फाँसी पर लटका दिया गया।



मास्टर अमीचन्द   अवध-बिहारी   भाई बालमुकुन्द

भाई बालमुकुन्द की फाँसी के बाद उनकी धर्म पत्नी रामरक्खी ने एकान्त वास लेकर खाना-पीना छोड़ दिया एवं ध्यान में लीन होकर होठों से केवल 'वन्दे-मातरम्' का जाप करते हुए अट्ठाईस दिन बाद प्राण त्याग दिये।



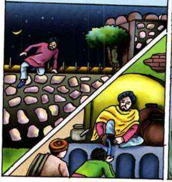
भाई बालमुकुन्द ने लाला लाजपतराय के साथ मिल कर अनेक वर्ष अछूतोद्धार व समाज सेवा के कार्य किये। फिर क्रान्तिकारी बने।

पंडित गेंदालाल दीक्षित



पडित गेंदालाल दीक्षित का जन्म आगरा जिले के मई गाँव में 30 नवम्बर, 1890 को हुआ था। पड़ित गेंदालाल ने देश की आजादी के लिए निश्चय किया कि ब्रिटिश सरकार से सशस्त्र संघर्ष करना होगा। अतः इन्होंने पहले 'शिवाजी समिति' और बाद में 'मातृवेदी' संस्थाओं का गठन किया। पडित गेंदालाल आर्य – समाजी थे। उन्होंने चम्बल के डाकुओं से सम्पर्क कर उन्हें डकैती की धारा से मोड़कर देश की आजादी की खातिर शस्त्र उठाने के लिए तैयार किया।

गेंदालाल दीक्षित ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध टक्कर लेने की योजना बना रहे थे। तभी किसी मुखबिर ने पुलिस को सूचना दे दी। पुलिस से भारी टक्कर में इनके 35 क्रातिवीर वीरगति को प्राप्त हो गये, और 45 गिरफ्तार कर लिये गये। रामप्रसाद विस्मिल ने इन्हें जेल से छुडाने की योजना बनाई। पर पुलिस को इस योजना का पता चल गया। अतः इन्हें ग्वालियर से मैनपुरी जेल भेज दिया गया यहाँ.......



... के गंदे वातावरण के कारण उन्हें टी. बी. हो गई एक दिन दीवार फाँद कर वह जेल से भाग निकले। भाग कर कोटा आ गये। यहाँ इनके मित्र रामनारायण ने इन्हें धोखा दिया। रात को धर्मशाला के एक कमरे से इनका सारा माल लेकर चम्पत हो गया और गेंदालाल दीक्षित को कमरे में बन्द कर कमरे के बाहर ताला डाल गया। तीन दिन बाद कमरे से बाहर आ सके। बीमारी की हालत में घर पहुँचे तो इनके पिता व घरवालों ने पुलिस के डर से उन्हें घर में रखने से मना कर दिया। बीमारी की हालत में पुलिस को चकमा देते हुए दिल्ली आकर एक प्याऊ पर पानी पिलाने का काम करने लगे। लेकिन बीमारी के कारण इनकी दशा बिगड़ गई। अति समय पर इनकी पत्नी व मित्र दिल्ली आ गये।



क्रान्तिकारी यशपाल



यशपाल का जन्म 3 दिसम्बर, सन् 1903 को 'फिरोजपुर छावनी' (पंजाब) में हुआ था। मूलरूप से उनके पूर्वज कांगड़ा (हिमाचल) निवासी थे। यशपाल के माता–पिता दृढ़ आर्यसमाजी थे। माताजी की इच्छा थी कि मेरा बेटा आर्य–उपदेशक बने और ऋषि दयानन्द की वैदिक विचारधारा को विश्व में फैलाये। इस भावना से माता–पिता ने यशपाल को शिक्षा प्राप्ति के लिए गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) में प्रवेश दिला दिया। यहाँ यशपाल के मन में देश प्रेम की भावना पनप गई। स्कूली शिक्षा के बाद यशपाल ने 'नैशनल कालेज, लाहौर' में प्रवेश ले लिया।

वहां इनको भगत सिंह और सुखदेव जैसे राष्ट्रप्रेमी साथी मिले। प्रोफेसर जयचन्द्र विद्यालंकार ने इन युवकों की भावना को सदृढ़ बनाया।

सन् 1921 में यशपाल क्रान्तिकारी बन गये और सशस्त्र क्रान्ति की घटनाओं में भाग लेने लगे। सन् 1929 ई0 में हुई वायसराय की गाड़ी के नीचे बम विस्फोट वाली घटना में यशपाल भी शामिल थे। चन्द्रशेखर आजाद के शहीद होने के बाद ये उनके स्थान पर हिन्दुस्तानी समाजवादी प्रजातन्त्र पार्टी के कमाण्डर बने। 'दिल्ली बम काण्ड' और 'लाहौर षड्यंत्र' में यशपाल को भी मुख्य अभियुक्त बनाया गया किन्तु ये फरार रहे। पुलिस के हाथ नहीं लगे। 1932 में इनकी पुलिस से मुठभेड़ हो गई। दोनों तरफ से गोलियां चली और ये पकड़े गये। इनको चौदह साल की सख्त सजा हुई। 1938 में उत्तर प्रदेश में कांग्रेस मन्त्रिमण्डल बनने पर उनको जेल से मुक्ति मिली। किन्तु 1941 में फिर गिरफ्तार कर लिया गया। यशपाल हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध कहानीकार, उपन्यासकार और क्रान्ति साहित्य के लेखक थे। उनके द्वारा लिखी दो दर्जन के लगभग पुस्तकें हैं जिनमें क्रान्ति के संस्मरण 'सिंहावलोकन' बहुत प्रसिद्ध है। काफी साहित्य तो जेल में ही लिखा था। इनके साहित्य पर भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' पुरस्कार तथा सोवियत रूस सरकार ने 'सोवियत–नेहरू पुरस्कार' दिया। सन् 1976 में आपका स्वर्गवास हो गया।



शहीदों की चिताओं पर, लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मिटने वालों का, यही बाकी निशां होगा॥

ओ३म्

विद्यार्थियों के आठ अवगुण



आलस्य



नशा करना



मूर्खता



लोभ-लालच करना



दुःखी असफल विद्यार्थी



चंचलता



अभिमान 'घमंड करना'



जड़ता
कभी पढ़ना कभी न पढ़ना



व्यर्थ इधर-उधर की बातें करना

जीवन में सफलता और उन्नति पाने के लिए विद्यार्थी अपने ये दोष दूर करें।